

SHRI DAMODAR GANESH BAPAT

Shri Damodar Ganesh Bapat is Ex-secretary and Patron of "Bhartiya Kushtaha Niwarak Sangh, Champa" and is known for his unparalleled contribution in eradication of leprosy and giving a self-reliant and dignified life to many leprosy patients. Even at the age of 82 he is incessantly working towards human welfare and is running a one of its kind leprosy eradication institute since last 45 years which also encompasses hostels & school for children of leprosy patients, a cowshed for preservation of Indian cow breeds, an organic farm and a vocational training centre which enables leprosy patients to live a life of dignity.

2. Born on April 29, 1935 in Pathrot village of Amravati district in Maharashtra in an upper middle class family Shri Bapat did B.A. and B.Com from Govindram Samseriya College of Commerce, Nagpur. Childhood association with Rashtriya Swayamsewak Sangh sowed the seeds of devotion for society in him. When he grew up he tried to do some small jobs but due to interest in sports and entertainment he could not sustain in a single job for long. After demise of his father in 1967 he took responsibility of his family. During this tough time he read about Swami Vivekananda and got deeply inspired by him and decided to dedicate his entire life for the service of the deprived people. He worked with several organizations such as Azad Hindu Sena, Sarvodaya, Hindu Seva Dal and Vanvasi Kalyan Ashram.

3. In 1972 while serving in tribal areas with Vanvasi Kalyan Ashram in Jashpur, Shri Bapat visited Bhartiya Kushtha Niwarak Sangh in Champa, Chhattisgarh (then Madhya Pradesh) which was the world's first leprosy eradication institute established by a leprosy patient Sadashiv Govind Katre. He was so moved that he decided to serve this organization for rest of his life, so after finishing his work in Jashpur he returned to Champa immediately and started serving leprosy patients. For his spirit of service, hard work and organizational capabilities, Shri Bapat was soon appointed Secretary of the organization in 1975. He always worked on the principal of `Nar Sewa hi Narayan Sewa Hai' (Service to The Man is Service to The God). Shri Bapat has been doing the complex task of restoring the people suffering with leprosy with dignity, for over four decades.

4. Shri Bapat's main thrust was firstly on resolving the misconceptions regarding leprosy disease. He tried to make young patients self-reliant and stopped older patients from begging and brought them in his institution and ensured that they live a normal life with dignity. He has offered treatment and service to 11000 indoor and 15000 outdoor patients in last 44 years and established a 30 bedded Sant Guru Ghasidas Hospital for leprosy patients with public help. Apart from medical treatment to leprosy patients he has ensured education and protection of their children by constructing hostels and school for them in the campus. He engaged the patients in organic farming by training them and provided 80 acres of land for the same. For elder members of the family, vocational training is being provided for computer working, sewing, driving, chalk manufacturing etc. to enable them to get a livelihood. He always envisioned all round development for the leprosy patients.

5. Shri Bapat is recipient of numerous awards and honours. He was awarded Vivekananda Sewa Puraskar in 1995, Bhaurao Devras Sewa Memorial Award in 1996, Param Pujya Honorable Golvalkar Guruji Award in 2002, Devi Ahilya Bai Holkar National Award in 2006, Pt. Deendayal Upadhyay Memorial Samman in 2010, Swami Akhandanand Award in 2016, Chhattisgarh Rajya Alankaran in 2004, Divya Prem Sewa Mission Award in 2006, Tilak Smarak Award in 2006 and Maharaja Agrasen Rashtriya Samman in 2015.



श्री दामोदर गणेश बापट

श्री दामोदर गणेश बापट "भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, चम्पा" के पूर्व सचिव एवं संरक्षक हैं तथा कुष्ठ रोग के उन्मूलन में अपने अप्रतिम योगदान और कई कुष्ठ रोगियों को स्वावलंबी और सम्मानित जिन्दगी प्रदान करने के लिए जाने जाते हैं। 82 वर्ष की उम्र में भी आप अनवरत रूप से मानव कल्याण की दिशा में कार्य कर रहे हैं और पिछले 45 वर्षों से, अपने ही तरह के एक कुष्ठ उन्मूलन संस्थान का संचालन कर रहे हैं, जिसमें कुष्ठ रोगियों के बच्चों के लिए छात्रावास एवं स्कूल, भारतीय गाय-प्रजातियों के संरक्षण के लिए एक गौशाला, एक कार्बनिक फार्म तथा एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र शामिल हैं, जो कुष्ठ रोगियों को एक सम्मानित जीवन व्यतीत करने में सक्षम बनाते हैं।

2. आपका जन्म 29 अप्रैल, 1935 में महाराष्ट्र के अमरावती जिले के पैथ्रांट गांव के एक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। आपने गोविंदराम समसेरिया कॉलेज ऑन कॉमर्स, नागपुर से बी ए एवं बी काम की पढ़ाई पूरी की। बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सानिध्य ने आप के अंदर समाज के लिए समर्पण के बीज बो दिए। जब आप थोड़ा बड़े हुए तो आपने कुछ छोटा-मोटा कार्य करने का प्रयत्न किया लेकिन खेल एवं मनोरंजन में रुचि होने के कारण वे ज्याद समय तक किसी एक कार्य से जुड़े नहीं रह सके। वर्ष 1967 में अपने पिता की मृत्यु के बाद, आपने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ संभाला। इस कठिन समय के दौरान आपने स्वामी विवेकानंद जी के बारे में पढ़ा और उनसे गहराई से प्रेरित हुए और अपने संपूर्ण जीवन को वंचित लोगों की सेवा के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया। आपने कई संगठनों जैसे-आजाद हिंद सेना, सर्वोदय, हिंदू सेवा दल तथा वनवासी कल्याण आश्रम के साथ कार्य किया।

3. वर्ष 1972 में, जैशपुर में वनवासी कल्याण आश्रम के साथ जनजातीय क्षेत्रों में सेवा करते समय आप चम्पा, छत्तीसगढ़ (तब मध्य प्रदेश) में भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का दौरा किया जो कि एक कुष्ठ रोगी सदाशिव गोविंद कात्रे द्वारा स्थापित विश्व का पहला कुष्ठ उन्मूलन संस्थान है। वे इतना अभिभूत हुए कि उन्होंने बाकी के जीवन भर इस संगठन की सेवा करने का निर्णय ले लिया, इसलिए जैशपुर में अपना कार्य समाप्त करने के उपरांत आप तत्काल चम्पा वापस आ गए और कुष्ठ रोगियों की सेवा करना आरंभ कर दिया। आपकी सेवा भावना, कठिन कार्य और सांगठनिक क्षमताओं के कारण आपको शीघ्र ही वर्ष 1975 में संगठन का सचिव नियुक्त किया गया। आपने सदैव 'नर सेवा ही नारायण सेवा है' के सिद्धान्त पर काम किया है। आप चार दशकों से अधिक समय से कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को सम्मान के साथ जीने के लिए भला चंगा करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं।

4. आपका प्राथमिक रूप से, मुख्य जोर कुष्ठ रोग से जुड़ी गलत अवधारणाओं को दूर करने पर था। आपने युवा रोगियों को स्वावलंबी बनाने का प्रयास किया तथा पुराने रोगियों को भीख मांगने से रोका और उन्हें अपने संस्थान में लाए तथा यह सुनिश्चित किया कि वे सम्मान के साथ सामान्य जीवन जिएं। आपने पिछले 44 वर्षों में 11000 इनडोर तथा 15000 आउटडोर रोगियों को उपचार एवं सेवाएं प्रदान की तथा जनता के सहयोग से कुष्ठ रोगियों के लिए 30 बिस्तरों वाले संत गुरु घासीदास अस्पताल की स्थापना की। कुष्ठ रोगियों को चिकित्सा उपचार देने के अतिरिक्त आपने उनके बच्चों के लिए कैम्पस के अंदर छात्रावास और स्कूल का निर्माण करके उनकी शिक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित की है। आपने रोगियों को कार्बनिक खेती का प्रशिक्षण देकर उन्हें इस कार्य में जुटाया और इस प्रयोजन के लिए 80 एकड़ भूमि मुहैया कराई। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को आजीविका के लिए सक्षम बनाने हेतु उन्हें कम्पयूटर पर कार्य करने, सिलाई, ड्राइविंग, खड़िया उत्पादन आदि के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण मुहैया कराया जा रहा है। आपने कुष्ठ रोगियों के लिए हमेशा समग्र विकास की कल्पना की है।

5. आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको वर्ष 1995 में विवेकानंद सेवा पुरस्कार, वर्ष 1996 में भाऊराव देवरस सेवा स्मारक पुरस्कार, वर्ष 2002 में परमपूज्य माननीय गोलवल्कर गुरुजी पुरस्कार, वर्ष 2006 में देवी अहिल्या बाई होल्कर राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्ष 2010 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक सम्मान, 2016 में स्वामी अखंडनंद पुरस्कार, 2004 में छत्तीसगढ़ राज्य अलंकरण, वर्ष 2006 में दिव्य प्रेम सेवा मिशन पुरस्कार, वर्ष 2006 में तिलक स्मारक पुरस्कार तथा वर्ष 2015 में महाराष्ट्र अग्रसेन राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा गया।